ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

संस्कृत और संस्कृति के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका

The Role of Women in The Preservation of Sanskrit and Culture

Paper Submission: 14/08/2021, Date of Acceptance: 24/08/2021, Date of Publication:25/08/2021

दिव्या
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
आर्य महिला पी0जी0 कालेज,
चेतगंज, वाराणसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

नारी सृजन का आधार एवं भारतीय संस्कृति की आधारशिला रही है। नारी शक्ति के अभाव में समाज, देश व राष्ट्र की संकल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षा, चिकित्सा, क्रीड़ा, संगीत, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, चलचित्र आदि सभी क्षेत्रों में महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान रहा है।

Women have been the basis of creation and the cornerstone of Indian culture. In the absence of women power, the concept of society, country and nation cannot be done. There has been an unforgettable contribution of women in all fields like education, medicine, sports, music, social, cultural, political, administrative, cinema etc.

मुख्य शब्दः संस्कृत, संस्कृति, विश्वबन्धुत्व, राष्ट्रीयएकता, अखण्डता, नैतिकता।

Sanskrit, Culture, World Brotherhood, National Unity, Integrity, Morality.

प्रस्तावना

संस्कृतभाषा एवं साहित्य भारतीय संस्कृति की संवाहिका है। भारतीय संस्कृति वैदिककाल से ही प्रचलित है। संस्कृतवाङ्मय में प्रतिपादित नारी विषयक धारणाएँ आदर्श परम्पराओं के अनुरूप है। संस्कृत वाङ्मय में नारी का मातृ, पुत्री, आदर्शपत्नी, प्रेमिका आदि सभी रूपों में चित्रण हुआ है।

अध्ययन का उद्देश्य

संस्कृतभाषा एवं साहित्य के अध्ययन के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करना तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका को बतलाना तथा साथ ही साथ भारतीय संस्कृति को आत्मशात करना।

मानवजीवन के तीन पक्षों ज्ञान, भाव एवं कर्म के साम´्जस्यको संस्कृति कहते हैं। मानवजीवन के ये तीनों पक्ष व्यावहारिक दृष्टि से बुद्धि, हृदय एवं व्यवहार के नाम से अभिहित किये जाते हैं। संस्कृति धर्म, दर्शन एवं कला से परिपूर्ण, विश्वबन्धुत्व, राष्ट्रीयएकता, अखण्डता आदि की भावनाओं से समन्वित होती है। भारतीय संस्कृति विश्व संस्कृतियों में महान् एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत - प्रोत है।

संस्कृतभाषा और साहित्य भारतीय संस्कृति की संवाहिका है। साहित्य समाज का दर्पण होता है, प्रतिबिम्ब, प्रतिरूप और प्रतिच्छाया होती है। साहित्य के माध्यम से तात्कालीन समाज, संस्कृति, धर्म एवं दर्शन का ज्ञान हमें हो जाता है। संस्कृति किसी देश अथवा समाज की जीवनदायिनी शक्ति होती है, जिसके माध्यम से उस देश अथवा समाज के मूल्यों, आदर्शो एवं गन्तव्यों आदि का निर्धारण होता है।

भारतीय संस्कृति वैदिककाल से ही प्रचलित है। वेदों में स्पष्ट रूप से भारतीय संस्कृति के स्वरूप के दर्शन होते हंै। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि द्वारा प्रणीत आदिकाव्य, रामायण भारतीय आर्य संस्कृति की आध्यात्मिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताओं का समवेत समन्वय है। ध्वनिकार आचार्य आनन्दवर्धन के अनुसार साहित्य में रस की उद्भूति' रामायण में वर्णित क्रौ´्चवध घटना से हुई है -

काव्यस्यात्मा स एवार्थस्तथा चादिकवेः पुरा।

क्रौ´्चद्वन्द्वियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः॥

ध्वन्यालोक/कारिका - 5

भारतीय संस्कृति के अत्यन्त ही सुन्दरतम् स्वरूप का वर्णन 'रामायण' में हुआ है। जीवन को प्रभावी बनाने के निमित्त उत्कृष्टतम आदर्शों को महाकवि वाल्मीकि ने अत्यन्त ही प्रभावपूर्ण ढंग से पाठकों एवं जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया है।

दया, परोपकार, परमात्मभक्ति, नैतिकता, सद्व्यवहार, सत्यवचन, त्याग, भातृसेवाभाव, पुत्रवात्सल्य, पातिव्रतधर्म, पिता की आज्ञापालन, राजा का प्रजा के प्रति, पिता का पुत्र के प्रति, पुत्र का पिता के प्रति, भाई का भाई के प्रति, देवर का भाभी के प्रति तथा सभी का समाज के प्रति कत्र्तव्य आदि का अत्यन्त ही यथार्थ विश्लेषण 'रामायण' में हुआ है। 'रामायण' में वर्णित सभी पात्र आदर्श के प्रतीक एवं प्रेरक हंै। वाल्मीकि रामायण की नायिका सीता अनिन्द्य सुन्दरी, मृदुभाषिणी, भावुक, वात्सल्यपूर्ण हृदयवाली, नम्रता, सरलता आदि गुणों सेयुक्त, गृहकर्म में दक्ष, आदर्शजीवनसंगिनी, दृढ़व्रती, गम्भीर स्वभाववाली, पवित्र पतिव्रता नारी हैं।'रामायण' को आधार बनाकर जितने भी नाटकों, काव्यों, महाकाव्यों आदि का प्रणयन हुआ है, उन सभी में भारतीय संस्कृति के स्वरूप के दर्शन होते हैं।रामायण की कथा पर आधारित नाटक 'उत्तररामचरितम्' में महाकवि भवभूति ने राम के मुख से सीता द्वारा बोली जाने वाली बोली की प्रशंसा करते हुए लिखा है -

म्लानस्य जीवकुसुमस्य विकासनानि
सन्तर्पणानि सकलेन्द्रिय मोहनानि।
एतानि च सुवचनानि सरोरुहाक्षि,
कर्णामृतानि मनसश्च रसायनानि॥

उत्तररामचरितम्, 1/36

राम के लिए सीता के कोमल, मृदुवचन उनके मुरझाये हुए जीवनकुसुम को विकसित करनेवाले, भलिभाँति तृप्त करनेवाले, सभी इन्दियों को मोहित करनेवाले कानों के लिए अमृत के समान तथा मन की शक्ति को बढ़ाने के लिए रसायन के समान है।

सीता के असाधारण पातिव्रत्य से प्रभावित होकर भगवती अरून्धती कहती है-

शिशुर्वा शिष्या वा यदसि मम तत्तिष्ठतु तथा
विशुद्धेरुत्कर्षस्त्वयि तु मम भक्ति दृढ़यति।
शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु ननु वन्द्यासि जगतां
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्ग न च वयः॥

उत्तररामचरितम्, 4/4

अर्थात् तुम पुत्री हो अथवा शिष्या हो, जो भी सम्बन्ध हो, वह वैसा ही रहे परन्तु तुम्हारे अन्तःकरण में जो पवित्रता का आधिक्य है, वह मेरी भक्ति को दृढ़ कर रहा है। तुझमें बालभाव हो अथवा स्त्रीभाव, तुम संसार की वन्दनीय हो क्योंकि गुणियों में गुण ही पूजा के स्थान होते हैं। चिह्नविशेष अथवा वय पूजा के स्थान नहीं होते हैं।

भारतीय संस्कृति हमेशा सदाचार की शिक्षा देती है। बाह्याडम्बर से रहित सरल जीवनपद्धति भारतीय संस्कृति की विशेषता है। नारी सृष्टि का आधार तथा भारतीय संस्कृति की आधारशिला रही है। महाकवि कालिदास भारतीय संस्कृतिके अनन्य उपासक हैं। उनकी नारीविषयक धारणाएं भारतीय संस्कृति एवं आदर्श परम्पराओं के अनुरूप है। उन्होंने नारी को प्रेमिका, आदर्शपत्नी, मातृत्व की गरिमा तथा प्रेम और त्याग की अनुपम प्रतिमा के रूप में प्रतिष्ठित किया है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की नायिका शकुन्तला प्रथमदर्शन से दुष्यन्त के प्रति आकृष्ट हो जाती है एवं उनसे प्रेम करने लगती है। शकुन्तला दुष्यन्त के वियोग में जब दिन - प्रतिदिन क्षीण होने लगती है तब सखियों द्वारा बार - बार पूछे जाने पर वह अपनी मनोव्यथा का जो कारण बताती है, उसमें उसके दुष्यन्त के प्रति अविचल प्रेम का प्रकाशन होता है -'तद्यदि वामनुमतं तथा वर्तेथां यथा तस्य राजर्षेरनुकम्पनीया भवामि। अन्यथाऽअवश्यं सि´्चतं मे तिलोदकम्'।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् , 3/पृष्ठ 109

अर्थात् यदि तुम दोनों की अनुमति हो तो वैसा प्रयत्न करो जिस प्रकार मैं राजर्षि दुष्यन्त की कृपापात्र हो जाऊँ, अन्यथा अवश्य ही तुमलोगों को तिलमिश्रित जल से मेरा तर्पण करना होगा।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में शकुन्तला पतिव्रता पत्नी के रूप में भी चित्रित हुई है। पंचम अंक में जब दुष्यन्त शकुन्तला को पहचानने से इन्कार कर देते हैं तब शकुन्तला अपने पति के द्वारा तिरस्कृत व परित्यक्त होकर अपनी माता मेनका के साथ हेमकूट पर्वत पर चली जाती है और वहाँ वह अपने पुत्र को जन्म देती है। सातवें अंक में शकुन्तला का जब दुष्यन्त के साथ मिलन होता है तो दुष्यन्त शकुन्तला के चरणों पर गिरकर क्रूरता के लिए पश्चाताप व्यक्त करते हैं तब उस समय भी शकुन्तला सहिष्णु पतिव्रता नारी की भाँति अपार वियोगरूप दारुण दुःख के सहन करने पर भी दुष्यन्त के प्रति कटु शब्दों का प्रयोग नहीं करती है, अपने भाग्य को कोसती हुई उन्हेंउठाती है- 'उत्तिष्ठतु आर्यपुत्रः। नूनं मे सुचरितप्रतिबन्धकं पुराकृतं तेषु दिवसेषु परिणामाभिमुखमासीद् येन सानुक्रोशोऽप्यार्यपुत्रांे मयि विरसः संवृत्तः'।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 7/पृष्ठ 323

अर्थात् आर्यपुत्र उठें। निश्चय ही पुण्यकर्म का अवरोधक मेरा पूर्वजन्म में हुआ पाप उन दिनों फलोन्मुख था, जिससे दयालु होते हुए भी आर्यपुत्र (आप) मेरे प्रति विरस (निर्दय) हो गये थे।

महाकवि कालिदास की दृष्टि में पुरुषों के समान स्त्रियाँ भी आदर एवं सम्मान की पात्र हैं। उन्होंने 'कुमारसंभवम्' में यह दर्शाया है कि अवस्था में छोटी होने पर भी पार्वती का सम्मान सभी मुनिगण करते हैं -

कृताभिषेकां हुतजातवेदसं
त्वगुत्तरासङ्गवतीमधीतिनीम्।

दिदृक्षवस्तामृषयोऽभ्युपागमत्
न धमवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते॥

कुमारसम्भवम्,, 5/16

रघुवंशम् के अजविलाप में नारी की उद्दात्त गरिमा का अत्यन्त ही सुन्दर वर्णन महाकवि कालिदास ने किया है -

गृहिणी सचिवः सखी मिथः
प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।
करुणाविमुखेन मृत्युना हरता
त्वं वद किं न मे हृतम्॥

रघुवंशम् , 8/67

अर्थात् एकमात्र तुम ही मेरी स्त्री, सम्मति देनेवाली मित्र, एकान्त की सखी और गानविद्या आदि ललितकलाओं में मेरी शिष्या थी। बतलाओ तो सही तुम्हें मुझसे छीनकर निर्दयी विधाता ने मेरा क्या नहीं छीन लिया।

उनकी दृष्टि में मातृरूप में नारी सर्वाधिक सम्माननीय है। 'रघुवंश' में सुदक्षिणा की पूर्णता उन्होंने मातृत्व में दिखलाई है। जिस प्रकार पुत्र कार्तिकेय को पाकर शंकर -पार्वती तथा प्रतापीपुत्र जयन्त को पाकर इन्द्र और शची प्रसन्न हुए थे उसी प्रकार अज को पुत्र में प्राप्त करने के बाद राजा दिलीप और सुदक्षिणा अत्यन्त प्रसन्न हो जाते हैं -

उमावृशाङ्कौ शरजन्मना यथा,
यथा जयन्तेन शचीपुरन्दरौ।
तथा नृपः सा च सुतेन मागधी
ननन्दतुस्तत्सदृशेन तत्समौ॥

रघुवंशम्, 3/23

महाकवि कालिदास ने अपने काव्यों में नारी के अत्यन्त उच्च, उद्दात्त, आदर्श, प्रेरक एवं गौरवगरिमा से मण्डित चरित को प्रदर्शित किया है। उनके कृतियों की यह विशेषता रही है कि उनके कृतियों की जो नायिकाएँ हैं, वे सभी एक सफल राष्ट्रनायक की जन्म देतीं हैं, जो आगे चलकर एक सुयोग्य एवं कुशल प्रशासक तथा एक - एक प्रसिद्ध वंश का संचालक होता है, जिससे सम्पूर्ण, राष्ट्र, देश व समाज का कल्याण होता है। उनकी उत्कृष्ट शासनपद्धति से भारतीय संस्कृति, धर्म एवं दर्शनादि की भी रक्षा होती है। जैसे - अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका भरत को, विक्रमोर्वशीयम् की नायिका आयुष् को, 'मालविकाग्निमित्रम्' की नायिका अग्निमित्र को, 'कुमारसम्भवम्' की नायिका कुमार को तथा 'रघुवंशम्' की नायिका रघु को जन्म देती है।

संस्कृतवाङ्मय के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय संस्कृति के संरक्षण मंे आदिकाल से ही महिलाओं का योगदान रहा है। वत्र्तमान समय में भी स्त्रियाँ गृहकार्यों के अतिरिक्त विविध क्षेत्रों में न केवल अपना योगदान दे रही है अपितु अपना कीर्तिमान स्थापित कर अपने राष्ट्र, देश व समाज के मान -सम्मान का भी वर्धन कर रही है। लतामंगेश्कर, आशा भोंसले, अरुन्धती राय, पी0वी0 सिन्धु, एम0सी0 मेरी कॉम, रानी रामपाल, साइना नेहवाल, सानिया मिर्जा, दीपाकर्माकर, साक्षी मलिक, स्व0 कल्पना चावला, सिरिशा बंदला, श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, स्व0 सुचिता कृपलानी, स्व0 श्रीमती इन्दिरा गाँधीआदि महिलाएँ भी हमारे देश में हुई हैं जिन्होंने संगीत, शिक्षा, क्रीड़ा, प्रशासनिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में अपना कीर्तिमान स्थापित कर अपने देश व राष्ट्र को गौरवान्वित किया है।

निष्कर्ष

संस्कृतवाङ्मय के अनुशीलन से ज्ञात होता है नारी, प्रेमिका, सेविका, मातृ, पुत्री, जीवनसंगिनी आदि सभी रूपों में वन्दनीया है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र, देश, व समाज की नींव नारी ही रही है।नारीशक्ति के अभाव में समाज, देश व राष्ट्र की संकल्पना भी नहीं की जा सकती है। महान् दार्शनिक अरस्तू का विचार हे कि स्त्रियों की उन्नति एवं अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति और अवनति निर्भय है।

सन्दर्भग्रन्थ

1. *ध्वन्यालोक / कारिका - 5*
2. *उत्तरामचरितम्, 1/36*
3. *उत्तररामचरितम्, 4/4*
4. *अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 3/पृष्ठ 109.*
5. *अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 7/पृष्ठ 323*
6. *कुमारसम्भवम्, 5/16*
7. *रघुवंशम्, 8/67*
8. *रघुवंशम् , 3/23*